Volume - 6 (2025)
Special Issue - 1 (March)
RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal
ISSN 2582-9173
Website : www.researchhub.org.in/research-hub !! Email : researchhubjournal@gmail.com

आधुनिक हिंदी के प्रमुख नाटकों में परिवार विखंडन

विनय कुमार दिलमोहन उपाध्याय
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
रा. तु. म. ना. विश्वविद्यालय
नागपुर, महाराष्ट्र-440033
Email- upadhyayvinay724@gmail.com
Mob.No. - 9834131849

सारांश:

मनुष्य एक सामाजिक एवं जीवन्त प्राणी है,समाज में जीवन-यापन करते हुए, वह स्वनिर्मित सम्बन्धों को जीता और उपभोग करता है,अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया करता हुआ सामाजिक सम्बन्धों को स्थापित करता है। हम यह जानते हैं कि समाज परिवर्तनशील और विकासशील होता है और मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सम्बंध का सृजन करता है और उनका निर्वाह करता है। संगठित समाज में सम्बंध संगठित रहते हैं और विघटित समाज में यही सामाजिक सम्बंध अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित रहते हैं। सामाजिक विघटन की स्थिति में व्यक्ति अपने कर्त्तव्य, आदर्श, मूल्य भूल जाते हैं, जिससे सामाजिक संरचना अस्त-व्यस्त होने लगती है।

इस शोध पत्र लेखन का उद्देश्य है कि उन सभी कारणों के तरफ समाज के प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान केंद्रित कराया जाय, जिसकी वजह से आधुनिक काल से अब तक अत्यधिक रूप में भारतीय समाज के परिवार टूट रहे हैं। इस हेतु मैंने आधुनिक काल के कुछ हिन्दी के प्रमुख नाटकों को केंद्र मे रखा है।

बीज शब्द : पारिवारिक विघटन, सामाजिक विघटन, सामाजिक परिवर्तन, नैतिक मूल्य ।

प्रस्तावना :

प्राचीन काल से लेकर आजतक समस्या सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बनके उपस्थित हुई हैं। आधुनिक युग की समस्याओं का स्वरूप जटिल होता दिखाई देता है। मनुष्य इच्छाओं का अभिलाषी बनता जा रहा हैं और यह इच्छा सदैव अतृप्त ही रहती है और जीवन में समस्याओं के रूप में उत्पन्न होती हैं।

साहित्य समाज का दर्पण हैं और व्यक्ति- व्यक्ति से समाज बनता हैं। साहित्य में समाज से संबंधित तथा व्यक्ति विशेष से संबंधित घटनाओं, समस्याओं को स्थान दिया जाता है। व्यक्ति जिन ग्रसित समस्याओं से जुझता है, उसे नाटक साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज की सभी समस्याओं को जाना जा सकता हैं। क्योंकि नायककार अपने नाट्यसाहित्य के माध्यम से मानव जीवन के स्वरूप एवम् समस्याओं का उद्घाटन करता आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी आज मानव जीवन में समस्याएँ कम होने की बजाय बढती ही नजर आती है।

प्राचीन युग में संयुक्त-परिवार होते थे और सारे परिवार के सदस्य एक वृद्ध व्यक्ति की आज्ञा का पालन करते थे। परन्तु वर्तमान युग में औद्योगिक विकास के कारण गाँवों के व्यक्ति नगरों में नौकरी के लिए आने लगे और अपने साथ अपने परिवार को भी साथ रखने लगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक शिक्षा के कारण भी संयुक्त-परिवार टूटने लगे। प्रत्येक व्यक्ति की समान आय न होने के कारण भी संयुक्त-परिवार में तनाव की स्थिति आई है। परिणामस्वरूप संयुक्त-परिवार टूटकर छोटे परिवारों का स्थान लेने लगे हैं।

संयुक्त परिवार में यदि एक बहू अधिक दहेज नहीं लाती तो उसे जेठ-देवरों, सास-नन्दों के व्यंग्य सुनने पड़ते हैं। परिणाम यह होता है कि वह घर से अलग हो जाती है। उपेन्द्रनाथ अश्क ने 'अलग-अलग रास्ते' नाटक में इसी रूप को व्यक्त किया है। रानी अपने साथ अपने पति की इच्छानुसार दहेज नहीं लाती। त्रिलोक अपने माता-पिता के कहने पर रानी को घर छोड़ने के लिए विवश करता है। वृन्दावन ताराचन्द से कहता है कि त्रिलोक स्वयं मान लिया है कि वास्तव में सौ में से अस्सी जोड़ों के असफल होने का कारण परिवारों का सम्मिलित होना है। ताराचन्द त्रिलोक के शब्दों की यावृत्ति करता है कि "मैं तो रानी को सचमुच मन से चाहता हूँ, उसका और उसके पिता का आदर करता हूँ किन्तु अपने माँ-बाप और भाई-बहिनों के हाथों विवश हूँ।"[1] परिणाम यह होता है कि विद्रोही पूरन और रानी परम्परावादी पिता का घर त्याग कर अन्यत्र चले जाते हैं। राज अपने पति से अपमानित होने पर भी अपने ससुर के यहाँ शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करती है। इस प्रकार इस नाटक में सारे पात्रों के अलग-अलग रास्ते हैं और संयुक्त परिवार का विघटन हो जाता है।

विष्णु प्रभाकर का नाटक 'टूटे परिवेश' एक ऐसे परिवार की कहानी को दर्शाता है जो विघटन की ओर अग्रसर है। यह नाटक आधुनिक जीवन की जटिलताओं और बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण पारिवारिक रिश्तों में आने वाली दरार को उजागर करता है। नाटक में दो पीढ़ियों के बीच के मतभेदों को दर्शाया गया है। पुरानी पीढ़ी के पारंपरिक मूल्य और नई पीढ़ी के आधुनिक विचार आपस में टकराते हैं, जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होता है।

जैसे कि इस नाटक के इन पत्रों के आपसी बातचीत से परिलक्षित होता है-

"**विश्वजीत** : क्या हो गया है दुनिया को ? सब अकेले-अकेले अपने लिए हो जीना चाहते हैं। दूसरे की किसी को चिता ही नहीं रह गयी है। एक हमारा जमाना था कि बड़ों की इजाज़त के बिना कुछ कर ही नहीं सकते थे।

विवेक : पापा ! आपका जमाना कभी का बीत गया। अब बीते जीवन की धड़कनें सुनने से अच्छा है कि वर्तमान की साँसों की रक्षा की ।

दीप्ति : लेकिन कुछ लोग हैं जो बीते इतिहास में ही रहना पसन्द करते हैं।

विश्वजीत : बन्द करो यह अपनी किताबी भाषा। हमें भी कुछ पता है। जो बीत जाता है, इतिहास बन जाता है, वही अपना होता है। उसको भूलकर वर्तमान की रक्षा कैसे की जा सकती है ? लेकिन मैं पूछता हूँ, तुम अब तक थे कहाँ ?"[2]

आधुनिक जीवन में आर्थिक दबाव पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करता है। पैसे की कमी के कारण

परिवार के सदस्यों के बीच संघर्ष होता है। घर में नौजवान लड़का बेरोजगार बैठा है,उसके पास कोई नौकरी नहीं है तो वह खुद भी तनाव में जीवन व्यतीत करता है और परिवार में उसका महत्व कम हो जाता है, इस वजह से परिवार में संघर्ष होता है और परिवार टूट भी जाते हैं।

विष्णु प्रभाकर का नाटक 'टूटे परिवेश' नाटक के एक और दृश्य में यह परिलक्षित होता है -

"विवेक : तो उनका उत्तर आ गया। हे भगवान, क्या लिखा है उन्होने ? (तेजी से लिफाफा फाड़कर पत्र निकालता है। पढ़ता है। दूसरे ही क्षण चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है। आपके प्रार्थना-पत्र पर हमने बड़ी गम्भीरता से विचार किया, लेकिन हमें खेद है कि आपकी प्रतिभा के योग्य इस समय हमारे पास कोई काम नहीं है। सदा आपके सहयोग की कामना करते हुए। (एकदम चीख-कर) झूठे, मक्कार, आपकी प्रतिभा के योग्य ! क्या सचमुच मुझमें कोई प्रतिभा है ? है तो उसका उपयोग क्यों नहीं हो सकता ? (दीर्घ निःश्वास के साथ पत्र फेंक देता है और दर्शकों की ओर देखता है।) मुझमें यदि कुछ प्रतिभा है तो बस अजियाँ लिखने की। आज का युवक जियाँ लिखते-लिखते मशीन बन गया है। (फिर तेज होकर) लेकिन मैं नहीं बनूंगा मशीन। मैं नहीं लिखूंगा अज़ियाँ।"[3]

कहीं न कहीं विवेक को नौकरी न मिलने के कारण वह हमेशा परेशान रहता है और इसी कारण वह अपने पिता,माता,चचेरे भाई दीपक सभी से नाराज और लड़ता रहता है। यह परिवार विखंडन का स्वरूप ही तो है। क्योंकि आर्थिक पक्ष भी परिवार को तोड़ने और जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' भी आधुनिक भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार में विघटन और तनाव का एक मार्मिक चित्रण करता है। नाटक में परिवार के प्रत्येक सदस्य के अधूरेपन और असंतोष को दर्शाया गया है, जिससे पारिवारिक संबंधों में दरार और विघटन उत्पन्न होता है। इसका स्वरूप हमें इस नाटक के पत्रों के आपसी संवाद से समझ आता हैं, जिसमे पुरुष एक (महेन्द्रनाथ जो सावित्री का पति है वह घर में खुद को अकेला और खुद को बोझ समझता है। तभी तो वह कहता है -

"पुरुष-एक: हाँ, पूछकर ही जानना है आज। कितने साल हो चुके हैं मुझे जिन्दगी का भार ढोते ? उनमें से कितने साल बीते हैं मेरे इस परिवार की देख-रेख करते ? और उस सबके बाद मैं आज पहुँचा कहाँ हूँ ? यहाँ कि जिसे देखो वही मुझसे उल्टे ढंग से बात करता है ? जिसे देखो, वही मुझसे बदतमीज़ी से पेश आता है ?

लड़का : (अपनी सफाई देने की कोशिश में) मैंने तो सिर्फ इसलिए कहा था, डैडी, कि...

पुरुष-एक : हर-एक के पास एक-न-एक वजह होती है। इसने इसलिए कहा था। उसने उसलिए कहा था। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो जब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ? हर वक़्त की दुत्कार, हर वक़्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की ?

स्त्री : (वितृष्णा से उसे देखती) यह सब किसे सुना रहे हो तुम ?

पुरुष-एक : किसे सुना सकता हूँ? कोई है जो सुन सकता है ? जिन्हें सुनना चाहिए, वे सब तो एक रबड़-स्टैंप के सिवा कुछ समझते ही नहीं मुझे। सिर्फ ज़रूरत पड़ने पर इस स्टैंप का ठप्पा लगाकर...

स्त्री : यह बहुत बड़ी बात नहीं कह रहे तुम ?

पुरुष-एक : मैं इस घर में एक रबड़-स्टैंप भी नहीं, सिर्फ एक रबड़ का टुकड़ा हूँ-बार-बार घिसा जानेवाला रबड़ का टुकड़ा। इसके बाद क्या कोई मुझे वजह बता सकता है, एक भी ऐसी बजह, कि क्यों मुझे रहना चाहिए इस घर में ?

सब लोग चुप रहते हैं।

नहीं बता सकता न ?

स्त्री : मैं नहीं जानती, तुम सचमुच ऐसा महसूस करते हो या...?

पुरुष : सचमुच महसूस करता हूँ। मुझे पता है, मैं एक कीड़ा हूँ जिसने अन्दर-ही-अन्दर इस घर को खा लिया है (बाहर के दरवाजे की तरफ़ चलता) पर अब पेट भर गया है मेरा। हमेशा के लिए भर गया है (दरवाजे के पास रुककर) और बचा भी क्या है जिसे खाने के लिए और रहता रहूँ यहाँ ?

चला जाता है। कुछ देर के लिए सब लोग जड़-से हो रहते हैं। फिर छोटी लड़की हाथ के टोस्ट को मुँह की ओर ले जाती है।"[4]

मोहन राकेश ने आधे -अधूरे नाटक के माध्यम से यह अवगत कराने का प्रयास किया है कि आर्थिक तंगी भी परिवार के सदस्यों के बीच तनाव और असंतोष का मुख्य कारण बन सकता है। महेंद्रनाथ की अस्थिर नौकरी और आर्थिक असुरक्षा परिवार को अस्थिरता की ओर ले जाती है।

'द्रौपदी' नाटक में मानवीय संबंधों के बिखराव और परिवार टूटने को प्रस्तुत किया गया है। भौतिक साधनों और धन की अंधी दौड़, आपाधांपी और हालतों के दबाव में नाटक का नायक मनमोहन वह अपनी सभी रिश्तों को पीछे छोड़ता हुआ जाता हैं। वह इस अंधी दौड़ में अपनी जमीन से, घर से कट जाता हैं। उसकी पत्नी सुरेखा को यह अनुभव होता है कि पति मनमोहन कई हिस्सों में बट गया है वह कभी घर में तो कभी दफ्तर में डूबा रहता है। संबंहीनता उसे ग्रस्त लेती है इसी पर डा० ब्रजराज किशोर का कथन है कि- "आत्मघाती किंतु स्वयंवर इन स्थितियों में वह जीवन, सुख, तृप्ति नयापन और ताजगी की तलाश में कभी अंजान के पास जाता है, कभी रंजना के पास, तो कभी वंदना के पास। लेकिन सब मृगमरिचिका ही सिध्द होता है। पानी नहीं मिलता, प्यास नहीं बुझती, सुरेखा नामक अंजली से एक-एक बूंद पानी रिसने की अनुभूति के बाद अंजना और दूसरी अंजलियों में जीवन दायी पानी की तलाश मनमोहन को कहा नहीं भटकाती। "[5]

द्रौपदी में ये चार पात्र अलका- राजेश तथा अनिल- वर्षा के पारिवारिक बिखराव के ओर संकेत करते हैं।

निष्कर्ष :

भारतीय समाज में आधुनिकीकरण का विकास तीव्र गती से होता चला गया। कम समय में सुख-सुविधाओं के सामान जुटने लगे और ग्रामीण शहरी लोगों में परिवेश परिवर्तन के दौरान बदलाव आते गए। ग्रामीण

लोग शहरी आकर्षण, चकाचौध से शहर में आकर बस गए और शहरी लोग पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते चले गए। कौटुंबिक ताना-बाना टूटने से आधुनिक संरवार उभरने की प्रक्रिया को गति मिल गई। समाज के विविध क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं ने परिवार को भी प्रभावित किया।

परिवार में एक ओर जहाँ प्रेम, ममता, सौहार्द्र, आदर्श, सच्चारिता, सदाचार, एक पत्नीव्रतता, स्वच्छ मानसिकता, सुखी दांपत्य, एक विवाह, सहयोग, सौख्य, बंधुत्व आदि का अस्तित्व चरमरा हो उठा और उसकी जगहपर कुंठा विकृति, विलासिता, भ्रष्टाचार, स्वार्थांधता, दुराचार वेश्यावृत्ति, डर, संत्रास, तलाक, बेमेल विवाह जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न होती गई।

आधुनिक नाटक साहित्य, जो समाज मे चल रहे यथार्थ का आईना है यह हमें इन नाटकों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है।

संदर्भ :

- उपेन्द्रनाथ अश्क : अलग-अलग रास्ते,पृ. 120
- टूटते परिवार: विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक 2, प्रभात प्रकाशन ,दिल्ली, पृ. 32-33
- टूटते परिवार: विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक 2, प्रभात प्रकाशन ,दिल्ली, पृ. 28
- मोहन राकेश : आधे अधूरे , पृ. 43-44
- डा॰ ब्राजराज किशोर, हिंदी नाटक और रंगमंच : समकालीन परिदृश्य - पृ 66